बाल किलकारी

(बिहार बाल भवन का मासिक अखबार)

वर्ष - 2, अंक-7 | मूल्य 10/- | जुलाई-2016

''सपनों का स्कूल जो होता, जिसमें चाँद-तारे होते,
गप्पे-शप्पे, बेंच पर ऊँघना, फिर तो मज़े हमारे होते।''

अक्सर कक्षा में बैठे-बैठे जब बेंच पर ही ऊँघने लगते हैं तो मास्टर साहब की कड़क आवाज आती है। फिर ख्याल आता है किसी ऐसे स्कूल का, जहाँ जी भर ऊँघने पर भी कोई ना डाँटे। तुम्हारा क्या ख्याल है इस सपने के स्कूल के बारे में? कभी सपनों की खिड़की से झाँक कर सजाया है इसे। कैसा होगा यह? क्या यह चिड़ियों के स्कूल की तरह किसी बड़े से आम के पेड़ पर होगा? या हैरी पोटर वाली जादुई स्कूल सा होगा? मेरे मन में तो हरदम एक अनोखे स्कूल का ख्याल आता है। जिसमें मेरे साथी चांद-तारे होते कद्दू जैसे चँदा मामा से खूब गप-शप चलती सूरज चाचू भी कोने में गर्म होकर बैठे रहते पर अचानक से टीचर की आवाज आती है तो लगता हैं, ओह मैं ! तो सपना देख रहा था। जो भी हो चाँद तारों की दुनिया बड़ी ही अनोखी है। यहाँ सब उल्लास, खुशी एवं उमंग में रहते हैं। कहें तो सबकी अपनी एक अलग ही दुनिया है। पंछियों की अपनी दुनिया, जानवरों की अपनी दुनिया और पेड़-पौधों की अपनी दुनिया, हमलोगों की भी अपनी दुनिया। कभी सोचा है इन चाँद तारों की दुनिया कैसी होगी? एक ऐसी दुनिया जहाँ चारो तरफ ग्रहों का अंबार है। टिमटिमाते तारे हैं, बादलों के कई रूप हैं। जो तारे जो सबसे नजदीक होते हैं असल में वे करोड़ों कि.मी. की दूर पर होते हैं। वैसे तो मेरा मन करता हैं कि जाऊँ और चाँद से पूछ ही लूँ, भाई तुम इतने उजले क्यूँ लगते हो? कोई क्रीम लगाई है क्या! वैसे मैंने पढ़ा था दोस्तों, कभी सोचा है चाँद तो अम्मा का भाई नहीं है। फिर भी हम उसे मामा क्यों कहते हैं?

किलकारी लाल, अभिनन्दन गोपाल

जैसा बोल, वैसा मोल

एक राजा अपने अनुचरों के साथ वन विचरण के लिए निकला। मार्ग में उसे जोर की प्यास लगी। बाहर पानी से भरा एक मटका रखा था। राजा ने एक अनुचर को उसमें से पानी लाने को कहा। राजा की आज्ञा पाकर अनुचर वहाँ गया और झोपड़ी में रहने वाले अंधे व्यक्ति से बोला, 'अरे, ओ अंधे! एक गिलास पानी दे।'

अंधा व्यक्ति बोला, 'तुझ जैसा सिपाही को मैं पानी नहीं पिलाउंगा और वह खाली हाथ लौट आया।

राजा ने दूसरे अनुचर को भेजा तो उसने भी वैसा ही व्यवहार किया। तुझ जैसे सेनानायक को मैं पानी नहीं पिलाऊंगा।' फलतः वह भी खाली हाथ लौट आया। जब दोनों खाली हाथ लौट आए, तब राजा स्वयं उस अंधे व्यक्ति के पास पहुँचा और विनम्रतापूर्वक प्रणाम कर बोला, 'महानुभाव, मुझे बड़ी तेज प्यास लगी है, गला सूखा जा रहा है। आपकी बड़ी कृपा होगी, मुझे एक गिलास पानी पिला दें। उस अंधे ने राजा को सम्मानपूर्वक अपने निकट बैठा कर कहा, 'आप जैसे विनयशील लोगों का ही राजा तुल्य सम्मान उचित है। आपके लिए पानी तो क्या शरीर को भी समर्पित कर सकता हूँ। इतना कह कर उसने राजा को पानी पिलाया। जब राजा तृप्त हो गया तब उसने उस अंधे व्यक्ति से पूछा, 'महाशय, आपने मुझसे पहले आये उन दोनों को कैसे पहचाना कि उनमें एक सिपाही व एक सेनानायक था और आपने राजा के रूप में मुझे कैसे पहचाना?

अंधा व्यक्ति बोला, 'बोलने के तरीके से किसी भी व्यक्ति का स्तर स्वतः ही निर्धारित हो जाता है कि वह कुलीन है या नीच।

विशेष कविता

जैसा मैं चाहती हूँ

वे मुझे रोकते हैं
धूल में नहाने से
जैसे चिड़िया नहाती है,
वे हँसने भी नहीं देते
जी खोलकर
जैसे दुनिया के सभी
फूल हँसते हैं।
मुझे समझ में नहीं आता
वे क्या पढ़ाते हैं
उसमें न नदी होती, न पहाड़
न गीत गाते झरने।
मेरी नन्ही-सी आँखों में
जो बसा है जंगल, उसमें
किसी भी पेड़ का
एक पत्ता छूकर नहीं देखा है
मेरे शिक्षक ने।
मैं चाहती हूँ पढ़ूँ, पर
शिक्षक मुझे वैसे नहीं पढ़ाते
जैसे मैं चाहती हूँ।

शुक्ला चौधरी

दोस्तो !

'बाल किलकारी अखबार' के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य-हम बच्चों की आवाज को बुलंद करना है और सृजनात्मक प्रतिभा को निखारना है। आप अपनी लिखी हुई कहानी, कविता, लघुकथा, चुटकुले, पहेली, चित्र, आपबीती, खेल, अखबार पर प्रतिक्रिया या रचनाएँ भेज सकते हैं। रचना के साथ अपना नाम, वर्ग, विद्यालय का पता, सम्पर्क नम्बर अवश्य ही भेजें। चुनी गई रचनाएँ अगले अंक में प्रकाशित की जाएँगी। हमारा पता इस अंक में है। ढूढों और अपनी रचनाएँ भेजो।

-बाल सम्पादक मंडल

चंद दोहे

★ बस्ता भारी हो गया, जाएँ कैसे स्कूल
थक जाते हैं खूब हम, बस्ता बना त्रिशूल।

★ योग और प्राणायाम, करें सवेरे रोज
तनाव दूर हो जात, हट जाता है बोझ।

★ बचपन ऐसा चाहिए, निश्छ ल हो आजाद,
बोझ न दे हमको तनिक अपनी यही मुराद,

★ बचपन ऐसा चाहिए मरते रहे उड़ान,
खेल और बस मस्तियाँ, हों इसकी पहचान।

★ बचपन ऐसा चाहिए पड़े न कोई डाँट,
घूमे हम निर्भीक हो, लिए हाथ मे हाथ।

घुमा डाला

एक मेढ़क 35 फुट कुएं में गिर गया। वह रोजाना तीन फुट ऊपर आता है, लेकिन रात में वह दो फुट नीचे गिर जाता है। बताइए उसे कुएं से बाहर निकलने में कितने दिन लगेंगे?

कैसे होता है

सूरज चाचा दिन में आते,
चंदा मामा है सुस्ताते।
दोनों की है बात निराली,
अंधेरे में जग सारा सोता है।
दिन व रात कैसे होता है?

टिम-टिम करते तारे आते,
सूरज चाचू गुम हो जाते।
लोग यही सवाल पूछते कि,
दोनों ही किसका पोता है।
दिन व रात कैसे होता है?

क्या दोनों के पंख लगे हैं,
या नभ में यूं पड़े हैं।
दोनों ही करते जादू है
मजा न कोई अपना खोता है।
बोलो! दिन व रात कैसे होता है?

रौशन पाठक, वर्ग - 8

किस्सा कहानी

अरे वाह

''माँ देखो, देखो आसमान में फिर चाँद-तारे आ गए, जल्दी लाकर दो, नहीं तो फिर से भाग जायेंगे।'' नंदू चाँद देखते ही आज फिर अपनी माँ से बोल पड़ा उसकी माँ सोचने लगी, न जाने क्या नंदू को हो गया है। रोज-रोज चाँद-तारे लाने की जिद कर रहा है। कोई खिलौना होता तो खरीद भी देती, वह तो नादान है, फिर उसे समझाते हुए बोली, ''बेटा, चाँद तारा दोनों भाई बड़े ही बदमाश है। अपनी माँ को छोड़ कहीं जाता ही नहीं। तुम्हारे पापा उसे लाने गए थे, पर वह दोनों नहीं आये और बोला हम अपनी माँ को छोड़कर कहीं नहीं जायेंगे। तभी उसे टूटता तारा दिखा। झट उसे दोस्तों की बात याद आयी। उसके दोस्त कहते थे, जब टूटता तारा दिखे तो उससे जो मांगते है, वह पूरा होता है। नंदू आँखे बंद, हाथ जोड़कर बोला प्लीज चाँद, दोस्तों बस एक बार अपने साथियों के साथ मेरे घर आओ न! मुझे तुम्हारे साथ खेलना है। प्लीज मना मत करना। फिर वह सोने चला गया। आधी रात में उसके घर चाँद और दस बारह तारे आए। चाँद ने चुपके से नंदू को उठाया। नंदू देखकर बहुत खुश हुआ। चाँद ने कहा, ''हम-सब आ गये नंदू, चलो खेलते हैं।'' नंदू धीरे से बोला, ''धीरे-धीरे बोलो मम्मी-पापा जाग जायेंगे।'' घर से सब बाहर निकले। नंदू के बहुत कहने पर चाँद तारे उसे गोद में उठाकर आसमान की तरफ चल पड़े नंदू वहाँ पहुँचते ही डर गया कि कहीं गिर न जाये। तारों ने उसे समझाया, ''डरो मत भाई! यहाँ से गिरोगे नहीं बल्कि उड़ोगे ''क्या सच में!'' नंदू ने उत्सुकता से पूछा। ''हाँ, हाँ देखो उड़कर।'' मुस्कुराते हुए चाँद ने कहा। नंदू? उड़ने तरह के नीले, लाल, गुलाबी पेड़ पौधे गुलाबी सांप आया। नंदू डर गया। ''डरों मत ये कुछ नहीं करेगा।'' चाँद ने कहा। नंदू आगे बढ़ा। सांप ने उसका फूलों की माला से स्वागत किया। उसके साथ सभी तारे खेल रहे थे। साथ पेड़ पौधे भी उछलने-कूदने लगा। नंदू एक फूल पर बैठे गया। फूल भी खुशी से उसे उछालने लगा। तभी चाँद नंदू, को खीर खिलायी। तब चाँद मन ही मन बोला वाह! रे भाई! इतना मौज-मस्ती और स्वादिष्ट खीर: खेल-कूद और मस्ती फिर चाँद के साथ वापस घर चल पड़ा।

प्रवीण कुमार वर्ग - 6

बूझो तो जाने

★ गोल-गोल थाली जैसा,
लट्टू सा है नाचता,
हाथों का हूँ खेल दिखाता,
मिट्टी को हूँ सवाँरता।

★ दुःख में साथ निभाती,
सुख में भी मैं आती,
चुपके-चुपके हौले-हौले,
बस नीचे गिर जाती।

★ जब-जब मैं पूछी जाती,
सबको चकरा देती हूँ,
जो मुझे पहचान सके,
खुशी उसे दिलाती हूँ।

★ चाक जैसा जीवन मेरा,
कुम्हार का है मेरे दो,
कोमल सा हूँ मिट्टी जैसा,
जल्दी से मुझे बुझो तो ।

आतंकवाद

बेरोजगारी की वजह से,
बढ़ रहा है आतंकवाद।
सोचता हूँ क्या करूँ,
जिससे जिंदगी हो आबाद ।।

क्या ऐसे ही देश में,
बढ़ता रहेगा आतंकवाद।
क्या करूँ जिससे,
घर घर हो जिन्दाबाद ।।

देश के स्वर्ग पर,
क्यों कर रहे हो वार।
समझो मेरी बात को,
छोड़ दो हथियार।।

सबको शिक्षा मिले
हो भरपूर प्यार
हिन्दुस्तान खुश रहे
हम रहे आबाद

विवेक कुमार, वर्ग : 6

कुछ नया करें।

तितली बनाना सीखें।

वर्ग आकार का एक पेज लेकर दोनों ओर से कोनों को ऐसे मिलाए कि आकार की लाईन उस पेज पर बन जाए। फिर चारों खानों को एक-दूसरेसे सटाते हुए पकड़े । अब से त्रिभुज आकार में ले आए अब दोनों कोनों को नीचे वाले कोने से मिलाये अब इसके नीचे वाले हिस्से को पीछे की ओर से ऊपर लाकर उसके कोन को ऊपर मोड़ वहीं चिपका दें। और फिर सटे हुए भाग को बीच से मोड़कर उंगलियों से दबाकर उसे छोड़ दें। अब आपकी तितली तैयार है।

पूनम, वर्ग : 8

झरोखा

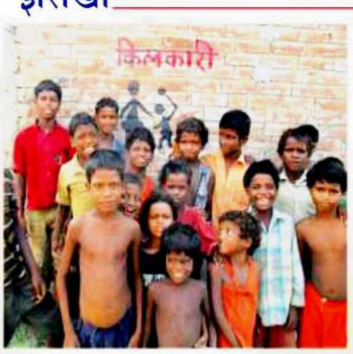

चलंत गतिविधि में
दीघा मुसहरी के बच्चे

बच्चा बैठक में बच्चे एवं
उनके अभिभावक

चित्रकला कार्यशाला में
बच्चे

चहक स्कूल रेडिनेश प्रोग्राम
शिक्षक प्रशिक्षण में भाग लेते शिक्षक

इस अंक के रचनाकार -प्रतिभागी- शुभम्, युवराज, ट्वींकल, खुशबु, नीरा, अमन, आदित्य, हर्षराज, पूनम, तुलसी, रौशन, अनन्या, कृष राज, रानी, सुमन।
बाल सम्पादक - मुनटुन, अतुल, प्रवीण, सम्राट, घुँघरु, अभिनंदन, प्रियंतरा,
संयोजक - सुधीर कुमार
कार्यकारी सम्पादक - राजीव रंजन श्रीवास्तव
सम्पादक - ज्योति परिहार, निदेशक बिहार बाल भवन किलकारी, पटना
कार्यालय- बिहार बाल भवन सैदपुर, किलकारी, पटना-800004 (बिहार)

अनोखी पार्टी

रात के लगभग 1 बजे। छुटकी ने कहा अरे-अरे सोनू भइया देखों न आज चँदा मामा के घर पार्टी है। ठीक है जा कर सोजा। पर क्यों......जाती है कि नहीं क्यों और कैसे करने बैठ जाती है, सोनू ने बीच में टोकते हुए कहा। छुटकी उदास मन से सोने चली गई। अभी तो आंख ही लगी थी कि उसे ऐसा लगा जैसे वो आसमान में परियों संग उड़ रही है। परियाँ उसे लेकर चंदा मामा के यहाँ जा रही थी। जब उसने आसमान से पृथ्वी को देखा तो वह बहुत सुन्दर दिख रही थी। परियाँ उसे आसमान के चीजों के बारे में बता रही थी। छुटकी ने परी से पूछा ये बड़ा-बड़ा गोला किस चीज का है और ये कहाँ से आया है। अरे छुटकी ये धरती के तरह ही एक गोला है जो सूर्य से टूट कर बना है। पर......पर क्या छुटकी ने टोका तो दूसरी परी इन सब पर जीवन संभव नहीं है। तो दुखी क्यो होती है हमारी धरती पर तो जीवन है न फिर क्या चिंता। अरे यह सारे तारे ढोल बाजे के साथ नाचते हुये कहां जा रहे हैं। चँदा मामा के यहाँ।

अरे-अरे हम तो पहुँच गये। चंदा मामा ने छुटकी का स्वागत बड़े प्यार से किया। जल्दी चलों मुझे भी बड़ी जल्दी है छुटकी बोली ''मामा आपने पार्टी में सोनू भइया को क्यों नहीं बुलाया' पर चंदा मामा बीच में ही बोल पड़े 'अच्छा बताओ तुमने क्या तौहफा लाया है मेरे लिये हाँ मैं लायी हूँ अभी नहीं दिखाउँगी। हा हा हा ठीक है ठीक है बाद में दिखाना। छुटकी खुशी झूमते हुए अंदर गई उसने देखा की यहां की पार्टी तो धरती की पार्टी से बहुत अधिक सुन्दर है। कुछ तारे शरबत दे रहे हैं तो कुछ खाना परोस रहे हैं। यहाँ खुशी का माहौल है। कुछ तारे वेटर बने हुये थे। मधुर और सुरीला गाना बजाया जा रहा है। हमारी तरह नहीं डीजे और नींद उड़ा देने वाले गाने बजाते हैं। वहाँ की पार्टी में परियाँ चाँद, सितारे और ग्रह सभी बहुत खुश थे। सभी नाच गाने में मस्त थे।

छुटकी की खुशी का तो ठिकाना नहीं रहा। जब उसने देखा कि बादल गरज-गरज कर सबको गाने सुनाने लगा। सभी उसके गाने पर झूमने लगे। सभी ने खूब तालियाँ बजाई। पर बिजली की तेज चमक से उसकी आँखे चौंध गई और उसका नींद खुल गयी।

खूशबु सिन्हा, वर्ग - 9

ऐसा क्यों

खुशी और उसके परिवार काश्मीर घूमने गए थे। वहाँ वे लोग पाँच दिनों के भ्रमण के बाद अपने घर के लिए लौट रहे थे। बस के द्वारा वे लोग एयरपोर्ट पर आ रहे थे। ''खुशी कैसा लगा तुम्हें कश्मीर? पापा ने मुस्कुराते हुए पूछा। ''बहुत अच्छा पापा। मुझे यहाँ के लोगों की भाषा बहुत अच्छी लगी। साथ ही यहाँ के पहाड़ों पर की चढ़ाई भी।'' खुशी कुछ याद करते हुए बोली। इसी तरह वे आपस में कश्मीर में बिताए पलो को याद कर रहे थे। बस एयरपोर्ट पर पहुँच गयी। उनका जहाज दोपहर 3 बजे का था। वे लोग चेकिंग करा कर अंदर जाकर प्रतीक्षा गृह में बैठ गए। यहाँ भी वे कश्मीर में बिताए पलों को ही याद कर रहे थे। अचानक धमाकेदार आवाज हुई। सभी चौकन्ना हो इधर-उधर देखने लगे। जैसे ही उन्हें बम फूटने का आभास हुआ। वो जान हथेली पर लेकर भागने लगे। खुशी के माता-पिता भी भागे। तेजी से भागने के क्रम में खुशी का हाथ पिताजी से छूट गया। 6 वर्ष की खुशी रोते-चिल्लाती हुई ''माँ-पापा'' का चिक्कार लगाते हुए भागी जा रही थी। ऐयरपोर्ट पर आतंकवादियों ने हमला कर दिया था। वो अंधाधुंध गोलियाँ चला रहे थे। उनमें से एक सरकार विरोधी नारे लगा रहा था और अपनी माँगों को लेकर आवाज बुलंद कर रहा था। इधर आतंकवादियों को सैनिकों ने चारों तरफ से घेर लिया था। अपने आप को घिरा देख उनमें से एक ने पास में ही छिपी खुशी को पकड़ लिया। उसकी माँ चिल्लाई पर उसके पिता ने कांपते होठों से पत्नी के मुंह को अपने हाथों से दबा दिया। आतंकवादी अपनी जान बचाने के लिए खुशी को लेकर गाड़ी तक गए। गाड़ी पर बैठे जाने के बाद चलती गाड़ी से उसे फेंक दिया। सभी दौड़कर खुशी के पास पहुँचे। उसे चलंत अस्पताल पहुँचाया गया। करीब दो घंटे तक उसका उपचार किया गया। खुशी अस्पताल के बिछावन पर चुपचाप पड़ी सबको निहार रही थी उसकी आंखों में एक ही सवाल तैर रहा था कि अखिर ऐसा क्यों होता है।

कृष राज, कक्षा - 9

वंशी का सपना !

वंशी रोज की तरह आज भी अपने गाय-बकरियों को चराने ले जा रहा था। हाथ में डंडा, सिर पर गमछी बांधे हुए, वह धोती और एक गंजी पहने था। उसे पढ़ने का बहुत शौंक था। वो चलता गया और एक जगह जब उसे हरी-भरी घास का मैदान दिखा तो उसने गाय-बकरियों को मैदान में चरने को छोड़ दिया! उसके बाद वह अकेले एक पेड़ के नीचे बैठकर सोचने लगा कि मेरे पास खेलने के लिए दोस्त भी नहीं है। क्या करूँ? रही बात पशुओं की तो वह सभी तो घास चरने में व्यस्त है। उसने एक स्कूल देखा। एक शिक्षिका बड़े प्यारे से बच्चों को अपने पास) खड़ा करकर छोटी सी स्लेट पर 'क' से कमल लिखवाकर पढ़वा रही थी। बंसी चुपके से एक पेड़ के पीछे बैठ गया। उन बच्चों को पढ़ते देखकर वह सपनों में खो गया। सपनों में वह देख रहा था कि स्कूल ड्रेस पहन कर अपने दोस्तों के साथ स्कूल जा रहा है और अपने दोस्तों के साथ अंग्रेजी में बात भी कर रहा था। उसके स्कूल का बेंच काफी बड़ा था वह उसपे बैठकर पढ़ रहा था। वह सपनों में बहुत ही खुश था। उसी बीच अचानक उसकी आँख खुली और उसका मन उदास हो गया। पर तभी उसका दोस्त दौड़ते हुए आया और हाँफते हुए बोला ''वंशी चल स्कूल चल तेरे बाबा ने कहा है।'' वंशी आश्चर्य और खुशी से उसे देख रहा था। उसके सपने-साकार जो हो रहे थे। भले ही उसे सपनों वाला स्कूल नहीं मिला, लेकिन उसके पढ़ने की इच्छा तो पूरी होने को है।

ट्वींकल चौधरी, कक्षा-8

जेट प्लेन धर आऊँगा

ऐ चँदा, क्यों तू गुमसुम सा,
क्या कोई नहीं तेरे पास है।
झिलमिल सितारों से भरा,
फैला सागर सा यह आकाश है।

राजा है तू यहाँ का फिर क्यों,
बादल में छुप शर्माता है।
इतने सारे तो दोस्त हैं तेरे
फिर क्यों न गप्पें लड़ाता है।

अम्मा कहती तू बिन कपड़े
हर ऋतु में रहता है।
बिन खिलौने खाने कैसे
तू-चूहे पेट में सहता है।

तू रुक मैं अम्मा से कहकर,
तेरे भी कपड़े सिलवाऊँगा
लेकर कपड़े, खिलौने, खाने
झट जेट प्लेन धर आऊँगा।

अतुल रॉय, वर्ग : दशम्

वही बस जाऊँ

कैसी होगी वह दुनिया ?
कैसा होगा ग्रह मंगल?
पृथ्वी की तरह ही होंगे,
क्या वहाँ भी अद्भुत जंगल?

बौने विशाल या अजीब?
होंगे वहाँ के प्राणी।
क्या कहानी सुनाती होगी,
उनकी दादी नानी।

दोस्ती आपस में वहाँ,
क्या सभी करते होंगे?
एलियन भी भला वहाँ,
क्या कभी मरते होंगे,

मेरी तमन्ना है कि,
मैं मंगल पर जाऊँ।
अच्छा लगा तो कुछ दिन,
वही पर बस जाऊँ।

गौरव राज, कक्षा - 9

नन्हीं तूलिका

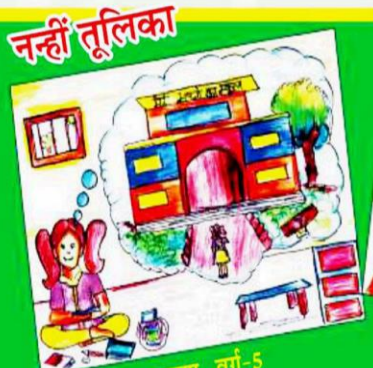

करण, वर्ग-5

मानव, वर्ग-3

जिया, वर्ग-6

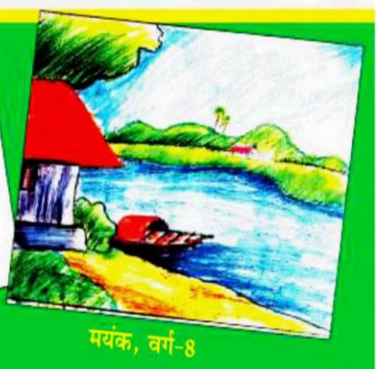

मयंक, वर्ग-8

[No.G1/Mail/Registration/Renewal/PT-73/2015

ऐसा हो मेरा स्कूल

खेल का मैदान हरा-भरा
डाँट ना लगती बड़ी-बड़ी
बात-बात पर पड़े न डण्डे
कॉपी पर मिले न अण्डे।

न बस्ता बड़ा, न पोथी भारी
चाहिए मुझको ऐसी फुलवारी
हँसी पर ना रोक-टोक हो
खिले खुशियों की क्यारी।

अलग और अद्भुत-सा
ऐसा हो मेरे सपनों का स्कूल
ठंडी में हो गर्मी
गर्मी में हो कूल-कूल।

सुमन कुमार

स्कूल हमारा

स्कूल मेरा मंदिर है,
बच्चे ही भगवान है।
टीचर मेरे गुरु हैं
देते वो ज्ञान है।

किताबें हमारी दुनिया है,
कॉपी हमारी जान है।
कलम पेंसिल है सरस्वती,
शिक्षा हमारी शान है।

झूम-झूम स्कूल जाएँ,
पढ़े हमेशा खेल-खेल में।
दोस्ती यारी सबसे हो
पाये ज्ञान सब मेल में।

रत्ना कुमारी, वर्ग - 6
हनी ड्यू प्वाइंट स्कूल

जरूरी है व्यायाम

हम बच्चों के लिए,
जरूरी है व्यायाम।
नियमित रूप से करेंगे,
सुबह चाहे शाम।

इसे रोज करने से तो,
स्वस्थ रहता तन और मन।
हर रोगों से बचाता ये,
स्वास्थ्य ही है मूल धन।

बहुत सारे खेलों से भी,
व्यायाम हो जाता है।
साथ ही हम बच्चों की,
मानसिक शक्ति बढ़ाता है।

अब हमें आलस न करना,
न करना है ज्यादा आराम।
क्योंकि स्वस्थ जीवन के लिए,
बहुत जरूरी है व्यायाम।

सम्राट समीर, वर्ग-10

चलो अंतरिक्ष की सैर करें

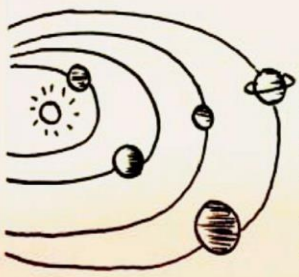

''तुम कौन हो, जो हमें दिखे भी नहीं और हमें यहाँ ले आये। आखिर हम यहाँ बिना ऑक्सीजन के कैसे रह पा रहे हैं?'' झुन्नू ने पूछा। एक गूँज में जवाब आया, ''मैं। मैं किसी को नहीं दिखता हूँ, क्योंकि मैं इंसान नहीं अंतरिक्ष हूँ। वैसे तो मैं बहुत बड़ा हूँ पर मैं अपनी कुछ खास चीजें तुम्हें दिखाऊँगा और डरो मत, मैंने अपनी शक्ति से ऑक्सीजन की तुम्हारी जरूरत पर रोक लगा दी है।'' तभी झुन्नू के साथी चंचल ने कहा, ''तो फिर देर किस बात की? चलो घूमने चलें, इस अनोखी दुनिया को। अचानक दोनों एक बहुत बड़े गोले से उड़ते-उड़ते टक्कर खा गये इसमें में तो बहुत रौशनी थी। अंतरिक्ष ने बताया, ''यह तो सूर्य है। मैं जानता हूँ तुम दोनों सोच रहे होगे कि सूर्य तो बहुत गर्म है तो फिर तुम बच कैसे गये? मैंने तुम्हारे आस-पास अपना अदृश्य सुरक्षा कवच लगाया है जिससे यहाँ की चीजें तुम्हें हानि नहीं पहुँचायेगी। खैर सूरज पृथ्वी का नजदीकी तारा है। इसमें भी ग्रैविटि होती है तभी तो यह ग्रहों को उड़ जाने से रोकता है।'' चंचल पूछ पड़ा, ''पर इसपर यह काला धब्बा कैसा है?'' अंतरिक्ष दुःखी होकर बोला, ''सूर्य की सतह पर लगे इस धब्बे को कोरोनल होल कहते हैं, जो एक तरह का एस्ट्रोनॉमिकल फिनोमना होता है। यह समय-समय पर सूर्य के कोरोना (वातावरण) में नजर आता है। माना तो यह भी जाता है कि ऐसा तब होता है जब सूर्य के चुम्बकीय क्षेत्र में थोड़ा खुलापन आता है। इसके चलते कोरोना से निकलने वाली गर्म सामग्री बाहर की ओर निकलती है। अच्छा अब ये देखो मरकरी (बुद्ध)।'' ''हाँ-हाँ, ये सबसे छोटा ग्रह है और दिन में उबलते पानी की तरह गर्म पर रात में बर्फ की तरह ठंडा हो जाता है।'' बीच में ही झुन्नू बोला। चंचल ने कहा, '' मैंने भी पढ़ा था कि अगला वाला शुक्र (वेनस) तो सबसे अधिक गर्म और चमकीला है इसीलिए इसे दिन का तारा कहते हैं।'' ''इसपर अंतरिक्ष ने बताया, ''हाँ, पर रात और दिन अंतरिक्ष में नहीं बल्कि तुम्हारी धरती पर उसके घूमने से होते हैं। आगे तो तुम्हारी पृथ्वी ही है। इसकी जानकारी तो तुम्हें है चलो यह देखो मंगल (मार्स)। इसे लाल ग्रह कहते हैं और जैसा कि तुम देख रहे हो यह लाल धूल, बालू और पत्थरों से ढका हुआ है। अनुमान लगाया जाता है कि यहाँ, तुम्हारी भाषा में कहें तो एलियन्स रहते हैं। यह तुम्हारी पृथ्वी से मिलता-जुलता है। यहाँ पहाड़, घाटियाँ और ज्वालामुखी भी हैं पर यहाँ का आसमान गुलाबी होता है।'' तभी चंचल ने पूछा, ''पर तुम तो अंतरिक्ष हों तो बताओ यहाँ सचमुच एलियन्स हैं या नहीं?'' अंतरिक्ष शरारती स्वर में बोला, ''ये तो एक राज है, अभी नहीं बताऊँगा। आओ तुम्हें जूपिटर (वृहस्पति) के बारे में बताता हूँ। इसके पास सबसे अधिक यानि की पूरे तिरसठ चाँद होते हैं। ये सबसे बड़ा ग्रह है और सबसे अधिक तेजी से मतलब नौ घंटों और पचपन मिनटों में सूर्य का एक चक्कर लगा लेता है।'' चंचल बोला ''वाह, यह तो बड़ा अनोखा है। अच्छा, इसके बाद वाला शनि (सैटर्न) ग्रह है न? मैं तो इसके चारों ओर घूमता यह सुंदर सा रिंग देखकर पहचान गया। जबकि यह बर्फ, पत्थरों और धूल से बना है फिर भी इतना सुंदर है।'' ''झुन्नू भी बोला, सही कहा और आगे देखो यूरेनस मतलब अरुण ग्रह। यह तो हरी और नीली गैसों की सतह से ढका हुआ है और सतह बहुत ही पतली भी है। आगे वाला ग्रह तो लगता है नेपच्यून यानि कि अरुण है।'' अंतरिक्ष ने जानकारी दी, '' और सभी ग्रहों के मुकाबले यह सूरज से ज्यादा दूर हैं। यहाँ तो हवा इतनी तेजी से बहती है कि उसकी रफ्तार पृथ्वी पर उड़ते हवाई जहाज से बहुत ही ज्यादा है। क्या तुम जानते हो प्लूटो भी पहले ग्रहों में गिना जाता था पर अब नहीं। मुझमें मतलब कि इस अंतरिक्ष में इंसानों द्वारा बनाये गये सैटेलाईट भी हैं जैसे कि इनसैट-1ए और इनसैट 4बी। अब यहाँ आओ चाँद पर। यहाँ ग्रैविटि बहुत कम हैं, तुम्हें उड़ते हुए बहुत हल्का महसूस हो रहा होगा, है न?''

''हाँ, बहुत ही हल्का'', दोनों ने साथ में कहा। अंतरिक्ष बोला, ''अच्छा क्या तुम देख रहे हो, तारे भी घूमते हैं।'' ''पर वो कैसे?'' ''तारे पूरब से पश्चिम की ओर घूमते हैं। इनकी अलग-अलग गैलेक्सियाँ होती हैं। तुम्हारी पृथ्वी और सूर्य मिल्की वे गैलेक्सी (आकाशगंगा) में हैं जिसमें लगभग सौबिलियन तारे हैं।'' चंचल बोला, ''सच्ची-मुच्ची, ये तो बहुत मजेदार है अंतरिक्ष तुममें तो हर जगह अनगिनत तारे हैं जो हमारी पृथ्वी और सूर्य से भी बहुत बड़े हैं। इनमें से सबसे चमकीला तारा ध्रुवतारा कहलाता है न। वैसे मेरा तो मन ही नहीं कर रहा है वापस आने का।'' इसपर अंतरिक्ष ने कहा, ''आओ मैं तुम्हें थोड़ी और सैर कराता हूँ पर जब तुम्हारी पृथ्वी पर सवेरा होगा तो तुम्हें स्कूल भी जाना होगा। अच्छा, वैसे तो तुम चाँद पर तुरंत पहुँच गये पर जानते हो यह पृथ्वी से तीन लाख चौसठ किमी. दूर है।'' इतना सुनकर वे दोनों चल दिए इस अनोखी दुनिया की थोड़ी और सैर पर। इस दिन को यादगार बनाने पर बदमाश चंचल और झुन्नु तो अब भी यही सोच रहे थे कि कितना अच्छा होता अगर वो एक दिन और यहाँ रुक पाते पर क्या करें सुबह-सुबह स्कूल भी तो जाना है।

प्रियंतरा भारती

मिलने आये चँदा मामा

आज राजू बहुत उदास और परेशान था। बस अकेले अपने कमरे में बैठा था। आज टीचर ने उसे कक्षा में बहुत डाँटा था। ''एक तो होमवर्क इतना भारी और हल गलत निकला तो ऐसी डाँट ?'' तभी माँ आई और बोली ''अरे मेरे प्यारे बच्चे? क्या हो गया है तुम्हें? अपनी माँ से नाराज हो क्या?'' उसने कुछ नहीं कहा पर माँ के बहुत मनाने पर वह बगियां में आया। माँ ने प्यार से कहा, ''आओ मैं तुम्हें एक तितली से मिलवाती हूँ।'' पर माँ मुझे नहीं मिलना है।'' राजू खींजता हुआ बोला। तभी एक तितली उड़कर आई और चाँद बनकर उसके हाथों पर आ बैठी, ''मैं तुम्हारा चँदा मामा हूँ, सिर्फ तुम्हें मनाने आया हूँ, अब तो मान जाओ।'' राजू खुशी से उछला और अपने चँदा मामा से बातें करने लगा, ''तो क्या हुआ जो टीचर ने डाँट दिया, राजू और भी मेहनत करेगा और एक दिन चँदा की तरह ही मशहूर हो जायेगा।'' राजू को चँदा मामा के साथ खेलता देख माँ भी मंद-मंद मुस्कुरा रही थी।

अनन्या, कक्षा-7

खोजबीन - ब्लैक होल एक नई चीज

ये हमारा ब्रह्माण्ड भी बड़ा निराला है। कई सारे विचित्र पिण्ड यहाँ है। यहाँ तारे टिमटिमाते, सूरज जगमगाते है। कितना निराला लगता है। आज तक हम सब सूरज, चांद, तारों के बारे में सुनते आए हैं। क्या तुमने कभी आज से पहले ब्लैक होल के बारे में सुना है। नहीं ना.... तो आओ आज मैं तुम्हें ब्लैक होल के बारे में बताता हूँ।

ब्लैक होल अंतरिक्ष में पाया जाता है। ये किसी भी वस्तु को अपनी ओर खींचता है। ये अंतरिक्ष में ऐसे स्थान पर है। जहाँ गुरुत्व बल इतना ज्यादा होता है कि इसके आर-पार तो प्रकाश भी नहीं जा सकती हैं। इसका कारण यह है कि इसमें इतने कम स्थान में इतना मैटर जमा होता है कि इसको कोई प्रकाश भेद नहीं सकता है। इस कारण हम इसे देख नहीं पाते हैं। ये अदृश्य होते हैं। इन्हें केवल विशेष उपकरणों वाली दूरबीनों के द्वारा खोज सकते हैं। आज वैज्ञानिक कई शोध के बाद कुछ निष्कर्ष पर आए हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि दुनिया में बढ़ती ऊर्जा खपत को पूरा करने का उपाय ब्रह्माण्ड में ही मौजूद है। एक छोटे ब्लैक होल में एक्सरे और गामा किरणों के रूप में एक करोड़ मेगावाट की दर से ऊर्जा मिलती है।

इस अंक के जवाब

घुमा डाला - 35 फुट
बूझो तो जानें - चाक, आंसू
पहेली, बच्चा

दूरभाष : 0612-3224919, 2661295 ई-मेल : info@kilkaribihar.org ब्लॉग : kilkaribihar.blogspot.in फेसबुक : www.facebook.com/kilkaribihar यूट्यूब : www.youtube.com/kilkaribihar

★ बच्चों द्वारा रचित, संपादित एवं बच्चों के लिए बाल मासिक अखबार। इस अखबार में छपी हुई रचनाएँ बच्चों के व्यक्तिगत विचार हैं। ★ बच्चों के लिए समर्पित